# CBSE Class 10 - Hindi A
## Sample Paper - 10

---

**Maximum Marks: 80**
**Time Allowed: 3 hours**

---

## General Instructions:

- इस प्रश्न-पत्र भें चार खंड हैं - क, ख, ग औय घ ।
- सबी खंडों के प्रशनों उत्तर देना अनिवार्य हैं।
- यथासंभव् प्रत्येक खंड के प्रशनों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रशनों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंको के प्रशनों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

---

## Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (10)**

   चंपारण सत्याग्रह के बीच जो लोग गांधीजी के सम्पर्क में आए वे आगे चलकर देश के निर्माताओं में गिने गए। चंपारण में गांधीजी न सिर्फ सत्य और अंहिसा का सार्वजनिक हितों में प्रयोग कर रहे थे बल्कि हलुवा बनाने से लेकर सिल पर मसाला पीसने और चक्की चलाकर गेहूँ का आटा बनाने की कला भी उन बड़े वकीलों को सिखा रहे थे, जिन्हें गरीबों की अगुवाई की जिम्मेदारी सौंपी जानी थी। अपने इन आध्यात्मिक प्रयोगों के माध्यम से वे देश की गरीब जनता की सेवा करने और उनकी तकदीर बदलने के साथ देश को आजाद कराने के लिए समर्पित व्यक्तियों की एक ऐसी जमात तैयार करना चाह रहे थे जो सत्याग्रह की भट्टी में उसी तरह तपकर निखरे, जिस तरह भट्टी में सोना तपकर निखरता और कीमती बनता है।

   गांधीजी की मान्यता थी कि एक प्रतिष्ठित वकील और हजामत बनाने वाले हज्जाम में पेशे के लिहाज से कोई फर्क नहीं, दोनों की हैसियत एक ही है। उन्होंने पसीने की कमाई को सबसे अच्छी कमाई माना और शारीरिक श्रम को अहमियत देते हुए उसे उचित प्रतिष्ठा व सम्मान दिया था। कोई काम बड़ा नहीं, कोई काम छोटा नहीं, इस मान्यता को उन्होंने स्थापित करना चाहा। मर्यादाओं और मानव-मूल्यों को उन्होंने प्राथमिकता दी ताकि साधन शुद्धता की बुनियाद पर एक ठीक समाज खड़ा हो सके। आजाद हिन्दुस्तान आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और आत्म-सम्मानित देश के रूप में विश्व-बिरादरी के बीच अपनी एक खास पहचान बनाए फिर उसे बरकरार भी रखे।

   i. गांधी जी ने अच्छे समाज के निर्माण के लिए किसे महत्व दिया?
   ii. एक प्रतिष्ठित वकील और हज्जाम के बारे में गाँधी जी की क्या मान्यता थी?

iii. गाँधीजी बड़े वकीलों को क्या सिखाना चाहते थे और क्यों?
iv. गाँधी आध्यात्मिक प्रयोग क्यों कर रहे थे।
v. व्यवसाय के लेकर गाँधीजी के क्या विचार थे?
vi. उपरोक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

## Section B

2. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**
   i. शिलांग में कलाम ने उस सैनिक को धन्यवाद दिया जो उनकी रक्षा के लिए प्रतिबद्ध था। (वाक्य भेद बताइए।)
   ii. प्रतिभाशाली और सहृदय होने के कारण अब्दुल कलाम हमेशा हर व्यक्ति के हृदय पर राज करेंगे। (संयुक्त वाक्य में बदलिए।)
   iii. वह आकर लौट भी गया परंतु किसी को कानोंकान खबर भी नहीं हुई। (सरल वाक्य बनाइए।)
   iv. उस्ताद जी ने सच्चे सुर साधक की तरह संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की लालसा को जीवित रखा था।
3. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**
   i. आओ ! कुछ बातें करें। (कर्मवाच्य में बदलिए।)
   ii. हमने उसको अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया। (कर्मवाच्य में बदलिए।)
   iii. आपके द्वारा उनके विषय में क्या सोचा जाता है? (कर्तृवाच्य में बदलिए।)
   iv. आज निश्चित होकर सोया जाएगा। (वाच्य का भेद बताइए।)
4. **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित का पद-परिचय लिखिए- (4)**
   i. सुरेश मेरी पुस्तक ले गया है।
   ii. वह बच्चा बहुत योग्य है।
   iii. अरे ! आप आ गए!
   iv. श्याम ने कल मुझे गाड़ी में बिठाया था।
5. I. **काव्यांश का रस पहचानकर उसका नाम लिखिए- (4)**
   i. “कहत नटत रीझत, खिझत, मिलत, खिलर लजियात।
   भरे भौन में करत हैं नैनन ही सों बात"
   ii. “जगी उसी क्षण विद्युतज्वाला,
   गरज उठे होकर वे क्रुद्ध
   "आज काल के भी विरुद्ध है।
   युद्ध-युद्ध बस मेरा युद्ध।”
   iii. "कौरवों का श्राद्ध करने के लिए
   या कि रोने को चिता के सामने,
   शेष अब है रह गया कोई नहीं,
   एक वृद्धा, एक अंधे के सिवा।"

II. **काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है?**

iv. “संकटों से वीर घबराते नहीं,
आपदाएँ देख छिप जाते नहीं
लग गए जिस काम में, पूरा किया
काम करके व्यर्थ पछताते नहीं।"

## Section C

6. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (6)**

काशी संस्कृति की पाठशाला है। शास्त्रों में आनंदकानन के नाम से प्रतिष्ठित। काशी में कलाधर हनुमान व नृत्य-विश्वनाथ हैं। काशी में बिस्मिल्ला खाँ है। काशी में हज़ारों सालों का इतिहास है जिसमें पंडित कंठे महाराज हैं, विद्याधरी हैं, 'बड़े रामदास जी हैं, मौजुद्दीन खाँ हैं व इन रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जन-समूह हैं। यह एक अलग काशी है जिसकी अलग तहज़ीब है, अपनी बोली और अपने विशिष्ट लोग हैं। इनके अपने उत्सव हैं, अपना गम । अपना सेहरा - बन्ना और अपना नौहा। आप यहाँ संगीत को भक्ति से, भक्ति का किसी भी धर्म के कलाकार से कजरी को चैती से, विश्वनाथ को विशालाक्षी से, बिस्मिल्ला खाँ को गंगाद्वार से अलग करके नहीं देख सकते।

i. काशी के लोगों की विशिष्ट पहचान क्या है ?
ii. काशी को क्यों जाना जाता है ?
iii. शास्त्रों में काशी किस नाम से प्रशिद्ध है ?

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

i. पाठ के आधार पर बालगोबिन के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।
ii. नवाब साहब ने अपने तरीके से खीरा खाने के बाद क्या किया और क्यों?
iii. फ़ादर बुल्के की उपस्थिति देवदारु की छायी जैसी क्यों लगती थी?
iv. 'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर मन्नू भंडारी के कॉलेज से शिकायती पत्र आने पर भी उनके पिता उनसे नाराज़ क्यों नहीं हुए?
v. 'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर मन्नू भंडारी के कॉलेज से शिकायती पत्र आने पर भी उनके पिता उनसे नाराज़ क्यों नहीं हुए?

8. **निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (6)**

एक के नहीं,
दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू;
एक के नहीं,
दो के नहीं,
लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा;
एक की नहीं,

दो की नहीं,
हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म;

i. कवि ने फसल को नदियों के जल का जादू क्यों कहा है?
ii. 'लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
iii. फसल को मिट्टी का गुण-धर्म क्यों कहा है?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**
   i. निराला जी बादलों से फुहारों, रिमझिम तथा अन्य प्रकार से बरसने की न कहकर 'गरजते हुए' बरसने की याचना क्यों करते हैं? बताइए।
   ii. संगतकार द्वारा स्थायी को सँभालने को स्पष्ट कीजिए।
   iii. 'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है' पंक्ति में कवि माथुर जी क्या संदेश देना चाहते हैं?
   iv. कन्यादान कविता में किसे दुःख बाँचना नहीं आता था और क्यों?
   v. धनुष को तोड़ने वाला कोई आपका ही सेवक होगा-के आधार पर राम के स्वभाव पर टिप्पणी कीजिए।
10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **(6)**
   i. 'माता का आँचल' पाठ में लड़कों की मंडली जुटकर विवाह की क्या-क्या तैयारियाँ करती थी ?
   ii. जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ में वर्णित खोई हुई नाक से गुजरात के किन-किन महापुरुषों की नाक बड़ी निकली? आप इस कथन के द्वारा कौन-सा भाव ग्रहण करते हैं तथा यह व्यंग्य राष्ट्र के प्रति लेखक की किस भावना का परिचायक है?
   iii. प्राकृतिक सौन्दर्य के अलौकिक दृश्यों में डूबकर मनुष्य अपनी परेशानियाँ भूल जाता है। 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

## Section D

11. **विज्ञापन की दुनिया** विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। **(10)**
   - विज्ञापन का युग,
   - भ्रमजाल और जानकारी,
   - सामाजिक दायित्व।

**OR**

**कम्प्यूटर : आज की आवश्यकता** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए।

- भूमिका
- कम्प्यूटर का आगमन
- विविध उपयोग
- लाभ-हानियाँ,

- विश्व की तीसरी आँख
- उपसंहार।

**OR**

**कम्प्यूटर : आज की आवश्यकता** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए।

- भूमिका
- कम्प्यूटर का आगमन
- विविध उपयोग
- लाभ-हानियाँ,
- विश्व की तीसरी आँख
- उपसंहार।

12. अपनी बहन को पत्र लिखकर योगासन करने के लिए प्रेरित कीजिए। **(5)**

**OR**

चेन्नई निवासी मित्र गोविंदन को ग्रीष्मावकाश में रानीखेत-नैनीताल की यात्रा के लिए आमंत्रित कीजिए।

13. किसी राज्य के पर्यटन विभाग की ओर से राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 25-50 शब्दों का एक विज्ञापन तैयार कीजिए। **(5)**

**OR**

आपको दुकान पर काम करने वाले लड़कों की आवश्यकता है। इस हेतु विज्ञापन का प्रारूप तैयार कीजिए।

# CBSE Class 10 - Hindi A
## Sample Paper - 10

## Answer
## Section A

1. i. मर्यादाओं और मानव मूल्यों को गांधीजी ने अच्छे समाज के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण माना क्योंकि साधन की शुद्धता पर ही एक सवस्थ समाज का निर्माण हो सकता है।
   ii. गाँधी जी की मान्यता थी कि इन दोनों में पेशे के लिहाज से कोई फर्क नहीं, दोनों की हैसियत एक ही है क्योंकि कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता ।
   iii. गाँधी जी बड़े वकीलों को हलुवा बनाने से लेकर सिल पर मसाला पीसना और चक्की चलाकर गेहूँ का आटा पीसने की कला सिखाना चाहते थे ताकि वे गरीब जनता की सेवा करने में हिचकिचाएँ नहीं और श्रम के महत्त्व को एक नई पहचान दिला सकें।
   iv. गाँधीजी अपने इन आध्यात्मिक प्रयोगों के माध्यम से वे देश की गरीब जनता की सेवा करने और उनकी तकदीर बदलने के साथ देश को आजाद कराने के लिए समर्पित व्यक्तियों की एक ऐसी जमात तैयार करना चाह रहे थे जो सत्याग्रह की भट्टी में उसी तरह तपकर निखरे, जिस तरह भट्टी में सोना तपकर निखरता और कीमती बनता है।
   v. गाँधी जी किसी काम को बड़ा अथवा छोटा नहीं मानते थे। वे पसीने की कमाई को सबसे अच्छी कमाई तथा शारीरिक श्रम को अहम मानते थे।
   vi. स्वावलम्बन और स्वरोज़गार

## Section B

2. i. मिश्र वाक्य।
   ii. अब्दुल कलाम प्रतिभाशाली और सहृदय थे इसलिए वह हमेशा हर व्यक्ति के हृदय पर राज्य करेंगे।
   iii. उसके आकर लौट जाने की किसी को कानोंकान खबर भी नहीं हुई।
   iv. उस्ताद जी सच्चे सुर साधक थे जिन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की लालसा को जीवित रखा था।
3. i. आओ ! हमारे द्वारा कुछ बातें की जाएँ।
   ii. उसे अच्छे संस्कार देने का प्रयास हमारे द्वारा किया गया। हमारे द्वारा उसे अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया गया।
   iii. आप उनके विषय में क्या सोचते हैं?
   iv. भाववाचक।
4. i. **सुरेश** - व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक, 'ले गया है' क्रिया का कर्ता
   व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन ,कर्ता कारक,'ले गयाा है'क्रिया का कर्ता।
   ii. **वह** - सार्वनामिक विशेषण, पुल्लिग, एकवचन, 'बच्चा' विशेष्य.
   iii. सार्वनामिक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन,' बच्चा' विशेष्य।

iv. **अरे!** - अव्यय, विस्मयादिबोधक, हर्षसूचक

v. **गाड़ी में** - जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'बिठाया' क्रिया से संबद्ध।

5. I. i. काव्यांश में संयोग 'श्रृंगार रस' है।
   ii. काव्यांश में 'रौद्र रस' है ।
   iii. काव्यांश में 'करुण रस' है | स्थायी भाव-शोक

   II. काव्यांश में 'वीर रस' है और --स्थायी भाव-'उत्साह' है।

## Section C

6. i. काशी के लोगों की विशिष्ट पहचान तहज़ीब और बोली है|
   ii. काशी को इसलिए जाना जाता है कि काशी संस्कृति की पाठशाला है | यहाँ कलाधर हनुमान और नृत्य विश्वनाथ हैं | यहाँ की अलग तहजीव है, हज़ारों सालों का इतिहास है जिसमें पंडित कंठे महाराज हैं, विद्याधर हैं, बड़े रामदास हैं, मौजुद्दीन खाँ है|
   iii. शास्त्रों में काशी आनन्दकानन के नाम से जाना जाता है ।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

   i. बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ ये थी कि कबीर के सीधे-सादे पद उनके कंठ से निकलकर सजीव हो उठते थे | इन पदों को सुनकर बच्चे-औरतें मंत्रमुग्ध हो जाते थे | हलवाहों के पैर एक विशेष क्रम-ताल में उठने लगते थे | उनका संगीत लोगों के मन को झंकृत कर देता था | ऐसा प्रतीत होता था कि उनके संगीत के स्वर की एक तरंग सीधे स्वर्ग की ओर जा रही है और दूसरी लोगों के कानों की ओर | उनके गीत समय, ऋतु और महीनों के अनुरूप होते थे |

   ii. अपने तरीके से खीरा खाने के बाद नवाब साहब लेट गए | लेट कर उन्होंने इस प्रकार जोर से डकार ली मानों वे तृप्त हो गए हों | खीरा काटने से लेकर उसे खाने तक की पूरी प्रक्रिया में स्वयं को थका हुआ दिखाने के लिए वे आराम करने का दिखावा करने लगे |

   iii. फ़ादर बुल्के की उपस्थिति देवदारु की छाया जैसी इसलिए लगती हैं क्योंकि वे सबके साथ पारिवारिक रिश्ते बनाकर रखते थे,सबके घरों में उत्सवों और संस्कारों में पुरोहित की भाँति उपस्थित रहते थे। हर व्यक्ति को उनसे स्नेह और ममता मिलती थी। दूसरों के लिए उनकी नीली आँखों में सदा वात्सल्य तैरता रहता था।

   iv. कॉलेज में लेखिका ने कॉलेज प्रबंधन समिति के विरुद्ध जाकर जो भी कार्य किए वे देश की स्वतंत्रता के लिए थे | उनके पिता भी यही चाहते थे कि लेखिका देश की आज़ादी के लिए कार्य करें इसलिए कॉलेज से शिकायती पत्र आने पर भी उनके पिता उनसे नाराज़ नहीं हुए |

   v. कॉलेज में लेखिका ने कॉलेज प्रबंधन समिति के विरुद्ध जाकर जो भी कार्य किए वे देश की स्वतंत्रता के लिए थे | उनके पिता भी यही चाहते थे कि लेखिका देश की आज़ादी के लिए कार्य करें इसलिए कॉलेज से शिकायती

पत्र आने पर भी उनके पिता उनसे नाराज़ नहीं हुए |

8. i. नदियों के जल से सिंचित होकर ही फसल लहलहा उठती है। जल के अभाव में तैयार फसल भी नष्ट हो सकती है। फसल को नदियों के पानी का जादू कहने का कारण यह है कि फसल के लिए बीज-अंकुरण से लेकर पकने तक पानी की जरूरत होती है। नदियों का यह पानी सिंचाई के काम आता है। इससे फसलें तैयार होती हैं।
   ii. लाख-लाख कोटि-कोटि' हाथ का आशय है कि फसल को तैयार करने में करोड़ों किसानों की मेहनत लगती है | अतः किसानो के स्पर्श के बिना भूमि बंजर हो जाएगी।
   'लाख-लाख कोटी- कोटी हाथों के स्पर्श की गरिमा' इस पंक्ति का आशय है कि फसल को परिश्रमी किसानों और मजदूरों के हाथों के श्रम से ही उगाया जाता है। श्रमिक वर्ग के परिश्रम का ही फल है - फसल। फसल उत्पादन करना किसी एक व्यक्ति के हाथ का काम नहीं है।
   iii. नदियों के जल, किसानों की मेहनत, धूप तथा हवा मिलने के बाद भी उपजाऊ मिट्टी के बिना फसल के लहलहाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। फसल को मिट्टी का गुण धर्म कहा गया है क्योंकि विभिन्न प्रकार की मिट्टी अपनी उर्वरा शक्ति से बीज अंकुरित कर उसका पोषण करती है, जिसके परिणामस्वरूप फसल तैयार हो जाती है।
9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

   i. कवि निराला ने बादलों को क्रांति का अग्रदूत माना है | दुखी लोगों के दुःख-दर्द दूर करने के लिए वे क्रांति लाना चाहते हैं | चुपचाप परिवर्तन की बात तो वे सोचते भी नहीं हैं इसलिए वे बादलों से गर्जना करते हुए बरसने की याचना करते हैं |

   ii. जब मुख्य गायक गाते हुए सुरों की मोहक दुनिया में खो जाता है और उसी में रम जाता है, तब संगतकार ही गीत की मुख्य पंक्ति या टेक के मूल स्वर को गाता रहता है। स्वर को बिखरने से बचाता रहता है तथा लय को कम-अधिक नहीं होने देता। वह मुख्य गायक को पुनः वास्तविक स्थिति में लेकर आता है और उनके गीत के बोल को बनाए रखता है।

   iii. जिस प्रकार शुक्ल पक्ष के पश्चात् कृष्ण-पक्ष आता है। जीवन में सुख-दु:ख का भी चोली-दामन का साथ है सुख की चाँदनी रातें ही नहीं, दु:ख की काली रातें भी मनुष्य के जीवन में आती हैं। इस कविता के माध्यम से कवि इस तथ्य से अवगत कराना चाहते हैं कि हर चांदनी रात में एक अंधकार भरी रात्रि छिपी होती है। अभिप्राय यह है कि हर सुख के पीछे दुख छिपा रहता है। अतः सुनहरी यादों अथवा रंगीन सपनों में जीना छोड़ कर यथार्थ का सामना करना चाहिए।

   iv. कन्यादान कविता में 'बेटी' को दुःख बाचना नहीं आता हैं क्योंकि जब उसका विवाह हो रहा था तब वह अधिक समझदार नहीं थी। वह अत्यंत भोली एवम् सरल स्वभाव की है उसे दु:ख का अनुभव नहीं है। उसको ससुराल के बारे में अभी कुछ भी जानकारी नहीं है। अभी वह ससुराल को भी एक खेल ही समझती है कि वहाँ पर भी सब मेरे माता-पिता जैसे ही होंगे या वहां पर भी जैसे हम अपने घर पर खेलते हैं, खाते- पीते हैं ऐसे ही ससुराल में भी रहेंगे पर उसे यह बिल्कुल भी पता नहीं है कि ससुराल की का जीवन अपने घर के जीवन से बहुत अलग है।

v. राम लक्ष्मण परशुराम संवाद में यह कोई आपका ही दास होगा वाक्य के आधार पर भगवान श्रीराम शील स्वभाव के होने का पता चलता है। परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास करते हुए राम ने बड़ी ही विनम्र, सील स्वभाव से कहा कि शिव धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई दास होगा-ऐसा कहने से यह पता चलता है कि राम शांत, विनम्र स्वभाव के हैं। उनकी वाणी में मधुरता का गुण विद्यमान हैं। वे जानते थे कि भगवान परशुराम को विनम्रता से ही समझाया जा सकता है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

i. 'माता का आँचल' पाठ में लड़कों की मंड़ली बारात निकालती थी। वे कनस्तर को तंबूरा बनाकर बजाते, अमोले को घिसकर उससे बड़े मजे से शहनाई बजाते, टूटी हुई चूहेदानी को पालकी बनाकर उसे कपड़े से ढक देते। कुछ बच्चे समधी बनकर बकरे पर चढ़ लेते थे और बारात चबूतरे के चारों ओर घूमकर दरवाजे लगती थी। वहाँ काठ की पटरियों से घिरे, गोबर से लिपे, आम और केले की टहनियों से सजाए हुए छोटे आँगन में कुल्हड़ का कलसा रख़ा रहता था। वहीं पहुँचकर बारात फिर लौट आती थी। लौटते समय खटोली पर लाल पर्दा डाल दिया जाता और दुल्हन को उस पर चढ़ा लिया जाता था। बाबूजी दुल्हन का मुँह देखते तो सब बच्चे हँस पढ़ते।

ii. जार्ज पंचम की नाक पाठ में बर्णित खोई हुई नाक से गुजरात के महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, विठ्ठल भाई पटेल, महादेव देसाई आदि महापुरूषों की नाक बड़ी निकली| इस कथन से हम यह भाव ग्रहण करते हैं कि हमारे देश के नेता के त्याग और बलिदान के आगे जार्ज पंचम नगण्य थे | यह व्यंग्य राष्ट्र के प्रति लेखक की देश के स्वाभिमान के प्रति संवेदनशील होने का परिचायक है।

iii. प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका मौन भाव से शांत हो, किसी ऋषि की भाँति सारे परिदृश्य को अपने भीतर भर लेना चाहती थी। वह कभी आसमान छूते पर्वतों के शिखर देखती तो कभी ऊपर से दूध की धार की तरह झर-झर गिरते प्रपातों को, तो कभी नीचे चिकने-चिकने गुलाबी पत्थरों के बीच इठला-इठला कर बहती चॉदी की तरह कौंध मारती बनी-ठनी तिस्ता नदी को, नदी का सौंदर्य पराकाष्ठा पर था। इतनी खूबसूरत नदी लेखिका ने पहली बार देखी थी वह इसी कारण रोमांचित हो चिड़िया के पंखों की तरह हल्की थी। शिखरों के भी शिखर से गिरता फेन उगलता झरना ‘सेवने सिस्टर्स वाटर फॉल' मन को आल्हादित कर रहा था। लेखिका ने जैसे ही झरने की बहती जलधारा में पाँव डुबोया वह भीतर तक भीग गई और उसका मन काव्यमय हो उठा। जीवन की अनंतता का प्रतीक वह झरना जीवन की शक्ति का अहसास दिला रहा था। सामने उठती धुंध तथा ऊपर मंडराते बादल लेखिका को और अधिक सम्मोहित कर रहे थे। नीचे बिखरे भारी भरकम पत्थरों पर बैठ झरने के संगीत के साथ ही आत्मा का संगीत सुनने लगी । पर्वतीय स्थलों का अनंत सौंदर्य का ऐसा अद्भुत और काव्यात्मक सौंदर्य लेखिका ने अपनी आंखों से निहारा। लेखिका ने कटाओ पहुँचकर बर्फ से ढूँकै पहाड़ देखे जिन पर साबुन के झाग की तरह सभी ओर बर्फ गिरी हुई थी। पहाड़ चाँदी की तरह चमक रहे थे। कहीं पर पहाड़ चटक हरे रंग का मोटा कालीन लपेटे हुए तो कहीं हल्का पीलापन लिए हुए प्रतीत होता है । वहां फूलों से भरी घाटियां है ।

## Section D

11. **विज्ञापन का युग:-**

आधुनिक युग प्रतियोगिता का युग है। उत्पादक को अपनी बनाई वस्तु की माँग उत्पन्न करना ही जरूरी नहीं होता, बल्कि वर्तमान को भी बनाए रखना उतना ही आवश्यक होता हैं। इन दोनों कार्यों के लिए वस्तु की उपस्थिति तथा उसके विभिन्न प्रयोग या उसकी उपयोगिता के विषय में उपभोक्ता को विज्ञापन द्वारा सूचित किया जाता है। विज्ञापन को यदि वर्तमान व्यापारिक संसार की रीढ़ कहा जाए, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। विज्ञापन वह कला है जिसके द्वारा किसी भी वस्तु को इस प्रकार विज्ञापित किया जाता है कि लोग उसे पहचान जाएँ और उसे अपना लें |

**भ्रमजाल और जानकारी:-**

आज जब हम अपने चारों ओर दृष्टि डालते हैं तो अपने आपको विज्ञापनों से घिरा पाते हैं। विज्ञापन को व्यापार की आत्मा कहना अत्युक्ति न होगी | विज्ञापन साधनों की अपेक्षा दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले विज्ञापन विभिन्न प्रकार की विचित्रताएँ लिए दर्शकों को अपने मोह जाल से फँसा लेते हैं। वस्तुत: दूरदर्शन पर प्रसारित होने । वाले विज्ञापनों का करिश्मा ही निराला है। रेडियो पर भी अनेक विज्ञापन प्रसारित होते हैं। कुल मिलाकर विज्ञापन कला ने आज व्यापार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान बना लिया |

आप जहाँ जाएँ, वहाँ विज्ञापनों की ध्वनियाँ आपके कानों में टकराती रहेंगी। भले ही आप अपना रेडियो न चलाएँ, आप पान की दुकान पर खड़े हैं-रेडियो सुनाई देता है-"पेश किया जाए मुगले-ए-आजम पान मसाला ।" किसी पार्टी में विभिन्न प्रकार की साड़ियों में सजी सुन्दर गुनगुना उठेंगे। 'रूप-सँवारे रूप निखारे'-कहियो अपने सैयां जी से, रूप की साड़ी लाएँ, रूप का सागर। आप बस में । जा रहे हैं-तभी किसी की जेब कट गई। आपको याद आता है-"अरे, पकड़-पकड़ो, मेरी जेब कट गई, कटी नहीं फट गई। कहा था मुनीम धागे से सिलाई करवाये-पैसे गिर गये हों तो उठा लो न' सड़क के चौराहे पर पहुँचे-"अरे-अरे देखकर नहीं चलते-क्या सड़क आपकी हैं-नहीं तो आपकी हैं-जेब्रा क्रॉसिंग पर पैदल पथ वालों को पहले चलने का हक है।"

अब तो दूरदर्शन विज्ञापन-बाजी में बाजी मार रहा है। विज्ञापन के नए-नए रूप इसमें दिखते हैं। निरमा, रिन, व्हील आदि अनेक धुलाई के पाउडर, अनेक प्रकार के साबुन, अनेक प्रकार की चाय, अनेक प्रकार की साड़ियाँ, जूते, चप्पल, मंजन, क्रीम,आलू के चिप्स, शीतल पेय आदि के विज्ञापन ग़ज़ब ढा रहे हैं। ये दर्शकों को मुग्ध करने के साथ ही उनकी जेब ढीली कराने में समर्थ हो रहे हैं।

जो भी विज्ञापन आकर्षक होता है, उसका नाम लोगों की जुबान पर चढ़ जाता है, जिससे विज्ञापित वस्तुओं की माँग में वृद्धि हो जाती है। इससे उत्पादों को लाभ होता है।

**सामाजिक दायित्व:-**

रेडियो और दूरदर्शन द्वारा बहुत-सी वस्तुओं का विज्ञापन बढ़ा-चढ़ा कर दिया जाता है जिससे उपभोक्ता भ्रम में पड़ जाता

है। इसके साथ ही मनचाहे संगीत कार्यक्रम में हर गीत के बाद विज्ञापन मन को खिन्न कर देता है। हमें विज्ञापन देखकर जानकारी अवश्य लेनी चाहिए परन्तु विज्ञापनों को देखकर वस्तुएँ नहीं लेनी चाहिए | विज्ञापनों में जो दिखाया जाता है, वे शत-प्रतिशत सही नहीं होता | विज्ञापन हमारी सहायता करते हैं कि बाज़ार में किस प्रकार की सामग्री आ गई है | हमें विज्ञापनों द्वारा वस्तुओं की जानकारियाँ प्राप्त होती है | विज्ञापन ग्राहक और निर्माता के बीच कड़ी का काम करते हैं | हमें चाहिए कि हम पूरे सोच-समझकर उत्पादों का प्रयोग करें | विज्ञापन हमारी सहायता अवश्य कर सकते हैं परन्तु कौनसा उत्पाद हमारे काम का है या नहीं, ये हमें तय करना चाहिए परन्तु वे हमारे उपयोग न आकर हमारा समय और पैसा दोनों बर्बाद करें, ये हमें अपने साथ नहीं होने देना चाहिए |

**OR**

**भूमिका:-**

आज का विश्व विज्ञान की नींव पर टिका है। विज्ञान और तकनीक की अद्भुत खोजों ने मनुष्य के जीवन में एक नवीन क्रांति ला दी है | कंप्यूटर मानव की इन्हीं अद्भुत खोजों में से एक है जिसने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी गहरी पैठ बना ली है। यह ऐसा इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क है जिसने अपनी अनगिनत विशेषताओं के बल पर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दस्तक दी है। आज हर संस्था और उद्योग में कंप्यूटर का प्रयोग विशाल स्तर पर हो रहा है | मोबाइल रिचार्ज से लेकर घर का सामान मंगवाने तक में कंप्यूटर एक अहम भूमिका निभा रहा है | कंप्यूटर आज रोज़मर्रा की उपयोगी वस्तु बन गया है | वास्तव में कंप्यूटर एक ऐसा यांत्रिक मस्तिष्कों का समन्वयात्मक और गुणात्मक योग है, जो तीव्र गति से न्यूनतम समय में त्रुटिहीन गणना करने में सक्षम है | अतः कंप्यूटर को सर्वाधिक तीव्र एवं शुद्ध गणना करने वाला यंत्र कहना कोई अतिशयोक्तिपूर्ण कदापि नहीं है |

**कंप्यूटर का आगमन:-**

इस प्रगति में कम्प्यूटर का आविष्कार इस शताब्दी की सर्वाधिक चमत्कारी घटना है। सन् 1926 में टेलीविजन का आविष्कार होने पर वैज्ञानिकों ने कम्प्यूटर के सम्बन्ध में अनुसंधान प्रारम्भ किया। लगभग डेढ़ दशक के अन्तराल में अमेरिका तथा इंग्लैण्ड के वैज्ञानिकों ने मानव के नये मस्तिष्क के रूप में कम्प्यूटर का आविष्कार कर वैज्ञानिक प्रगति का नया अध्याय प्रारम्भ किया। आरम्भिक कम्प्यूटर इतने स्थूलकाय थे और उनका संचालन इतना श्रमसाध्य था कि कम्प्यूटर का कोई उज्ज्वल भविष्य नहीं दिखाई देता था। सर्वप्रथम एबेकस का आगमन हुआ। यह बच्चों को शिक्षा दिलाने में काफी लोकप्रिय हुआ। जापान में आज भी शिक्षण कार्य में इसका उपयोग होता है। आधुनिक कम्प्यूटर का सूत्रपात करने का श्रेय इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक चार्ल्स बैवेज को जाता है। इन्होंनें 19वीं शताब्दी में पहला कंप्यूटर बनाया | भारत में कम्प्यूटर का आगमन 1985 के आसपास हुआ, परन्तु भारत अब कम्प्यूटर निर्माण के क्षेत्र में स्वावलम्बी बन चुका है।

**विविध उपयोग:-**

विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में गणित की जटिल विस्तृत गिनतियाँ, युद्ध में विमानों, पनडुब्बियों, शत्रु के निश्चित ठिकानों पर सटीक हमला करने वाली मिसाइलें कम्प्यूटर द्वारा ही संचालित होती हैं। सूचनाएँ एकत्र करने में कम्प्यूटर का

व्यापक रूप में प्रयोग हो रहा है। चिकित्सा क्षेत्र में कम्प्यूटरीकृत मशीनों के द्वारा चिकित्सा विज्ञान नई उँचाइयों को छू रहा है। आज मानव जीवन का कोई भी क्षेत्र इसके प्रयोग से अछूता नहीं है | बैंकिंग, प्रकाशन, कला, अनुसंधान और औद्योगिक क्षेत्रों में तो कंप्यूटर ने क्रांति ला दी है |
लगभग प्रत्येक क्षेत्र में आज कम्प्यूटर का उसकी उपयोगिता के कारण व्यापक रूप से प्रयोग हो रहा है। रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों पर कम्प्यूटर का प्रयोग आरक्षण आदि के लिए किया जा रहा है। चिकित्सा के क्षेत्र में कम्प्यूटरीकृत मशीनों का प्रयोग रोगी का रोग पहचानने और चिकित्सा करने में किया जा रहा है।

**लाभ-हानियाँ:-**

ज्योतिष, अन्तरिक्ष, मौसम की सूचना, चुनाव क्षेत्र आदि में कंप्यूटर सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है | कम्प्यूटर का यह रोमांचकारी और सुविधा प्रदायक पक्ष एक खतरे की घंटी भी है। कम्प्यूटर के सतत प्रयोग ने मनुष्य को निष्क्रिय और उत्साह विहीन प्राणी बना दिया है। उसकी प्राकृतिक क्षमताओं का ह्रास होता जा रहा है | वर्तमान स्थिति से स्पष्ट हो रहा है कि आगे के युद्ध कम्प्यूटर नियन्त्रित होंगे और क्षणमात्र में मानवों के विशाल नगर व बस्तियाँ ध्वस्त की जा सकेगी।

**विश्व की तीसरी आँख:-**

यह भी यथार्थ है कि कम्प्यूटर आज विश्व की तीसरी आँख बन चुका है क्योंकि कम्प्यूटर पर इंटरनेट के माध्यम से अल्प समय में ही संसार के किसी भी कोने की कोई भी सूचना, आँकडे या समाचार तुरन्त प्राप्त किए जा सकते हैं। अन्तरिक्ष और दूरसंचार के क्षेत्र में कम्प्यूटर ने क्रान्ति ला दी है। आज मानव विश्व युद्धों की आशंका से त्रस्त है, परन्तु आगे उसे ब्रह्माण्ड युद्धों को भी झेलना पड़ सकता है।

**उपसंहार:-**

वर्तमान युग कंप्यूटर का युग है | आज कम्प्यूटर के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कम्प्यूटर के कारण प्रत्येक क्षेत्र में विकास की गति दस गुनी से लेकर हजार गुनी तक बढ़ सकती है पर मानव को अपनी भावनाओं का अस्तित्व भी बनाए रखने के लिए स्वयं की कंप्यूटर से निर्भरता कम करनी होगी नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब सम्पूर्ण विश्व को केवल यांत्रिक विश्व बनने से कोई नहीं रोक सकता |

**OR**

**भूमिका:-**

आज का विश्व विज्ञान की नींव पर टिका है। विज्ञान और तकनीक की अद्भुत खोजों ने मनुष्य के जीवन में एक नवीन क्रांति ला दी है | कंप्यूटर मानव की इन्हीं अद्भुत खोजों में से एक है जिसने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी गहरी पैठ बना ली है। यह ऐसा इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क है जिसने अपनी अनगिनत विशेषताओं के बल पर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दस्तक दी है। आज हर संस्था और उद्योग में कंप्यूटर का प्रयोग विशाल स्तर पर हो रहा है | मोबाइल रिचार्ज से लेकर घर का सामान मंगवाने तक में कंप्यूटर एक अहम भूमिका निभा रहा है | कंप्यूटर आज रोज़मर्रा की उपयोगी वस्तु बन गया है |

वास्तव में कंप्यूटर एक ऐसा यांत्रिक मस्तिष्कों का समन्वयात्मक और गुणात्मक योग है, जो तीव्र गति से न्यूनतम समय में त्रुटिहीन गणना करने में सक्षम है | अतः कंप्यूटर को सर्वाधिक तीव्र एवं शुद्ध गणना करने वाला यंत्र कहना कोई अतिशयोक्तिपूर्ण कदापि नहीं है |

**कंप्यूटर का आगमन:-**

इस प्रगति में कम्प्यूटर का आविष्कार इस शताब्दी की सर्वाधिक चमत्कारी घटना है। सन् 1926 में टेलीविजन का आविष्कार होने पर वैज्ञानिकों ने कम्प्यूटर के सम्बन्ध में अनुसंधान प्रारम्भ किया। लगभग डेढ़ दशक के अन्तराल में अमेरिका तथा इंग्लैण्ड के वैज्ञानिकों ने मानव के नये मस्तिष्क के रूप में कम्प्यूटर का आविष्कार कर वैज्ञानिक प्रगति का नया अध्याय प्रारम्भ किया। आरम्भिक कम्प्यूटर इतने स्थूलकाय थे और उनका संचालन इतना श्रमसाध्य था कि कम्प्यूटर का कोई उज्ज्वल भविष्य नहीं दिखाई देता था। सर्वप्रथम एबेकस का आगमन हुआ। यह बच्चों को शिक्षा दिलाने में काफी लोकप्रिय हुआ। जापान में आज भी शिक्षण कार्य में इसका उपयोग होता है। आधुनिक कम्प्यूटर का सूत्रपात करने का श्रेय इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक चार्ल्स बैवेज को जाता है। इन्होंनें 19वीं शताब्दी में पहला कंप्यूटर बनाया | भारत में कम्प्यूटर का आगमन 1985 के आसपास हुआ, परन्तु भारत अब कम्प्यूटर निर्माण के क्षेत्र में स्वावलम्बी बन चुका है।

**विविध उपयोग:-**

विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में गणित की जटिल विस्तृत गिनतियाँ, युद्ध में विमानों, पनडुब्बियों, शत्रु के निश्चित ठिकानों पर सटीक हमला करने वाली मिसाइलें कम्प्यूटर द्वारा ही संचालित होती हैं। सूचनाएँ एकत्र करने में कम्प्यूटर का व्यापक रूप में प्रयोग हो रहा है। चिकित्सा क्षेत्र में कम्प्यूटरीकृत मशीनों के द्वारा चिकित्सा विज्ञान नई उँचाइयों को छू रहा है। आज मानव जीवन का कोई भी क्षेत्र इसके प्रयोग से अछूता नहीं है | बैंकिंग, प्रकाशन, कला, अनुसंधान और औद्योगिक क्षेत्रों में तो कंप्यूटर ने क्रांति ला दी है |
लगभग प्रत्येक क्षेत्र में आज कम्प्यूटर का उसकी उपयोगिता के कारण व्यापक रूप से प्रयोग हो रहा है। रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों पर कम्प्यूटर का प्रयोग आरक्षण आदि के लिए किया जा रहा है। चिकित्सा के क्षेत्र में कम्प्यूटरीकृत मशीनों का प्रयोग रोगी का रोग पहचानने और चिकित्सा करने में किया जा रहा है।

**लाभ-हानियाँ:-**

ज्योतिष, अन्तरिक्ष, मौसम की सूचना, चुनाव क्षेत्र आदि में कंप्यूटर सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है | कम्प्यूटर का यह रोमांचकारी और सुविधा प्रदायक पक्ष एक खतरे की घंटी भी है। कम्प्यूटर के सतत प्रयोग ने मनुष्य को निष्क्रिय और उत्साह विहीन प्राणी बना दिया है। उसकी प्राकृतिक क्षमताओं का ह्रास होता जा रहा है | वर्तमान स्थिति से स्पष्ट हो रहा है कि आगे के युद्ध कम्प्यूटर नियन्त्रित होंगे और क्षणमात्र में मानवों के विशाल नगर व बस्तियाँ ध्वस्त की जा सकेगी।

**विश्व की तीसरी आँख:-**

यह भी यथार्थ है कि कम्प्यूटर आज विश्व की तीसरी आँख बन चुका है क्योंकि कम्प्यूटर पर इंटरनेट के माध्यम से अल्प समय में ही संसार के किसी भी कोने की कोई भी सूचना, आँकडे या समाचार तुरन्त प्राप्त किए जा सकते हैं। अन्तरिक्ष और

दूरसंचार के क्षेत्र में कम्प्यूटर ने क्रान्ति ला दी है। आज मानव विश्व युद्धों की आशंका से त्रस्त है, परन्तु आगे उसे ब्रह्माण्ड युद्धों को भी झेलना पड़ सकता है।

**उपसंहार:-**

वर्तमान युग कंप्यूटर का युग है | आज कम्प्यूटर के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कम्प्यूटर के कारण प्रत्येक क्षेत्र में विकास की गति दस गुनी से लेकर हजार गुनी तक बढ़ सकती है पर मानव को अपनी भावनाओं का अस्तित्व भी बनाए रखने के लिए स्वयं की कंप्यूटर से निर्भरता कम करनी होगी नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब सम्पूर्ण विश्व को केवल यांत्रिक विश्व बनने से कोई नहीं रोक सकता |

12. ए-2/85,
वसंत विहार,
नई दिल्ली।
दिनांक ........
प्रिय संजना
प्रसन्न रहो।

तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर चिन्तित होना स्वाभाविक था कि अभी भी तुम्हारा स्वास्थ्य पूरी तरह ठीक नहीं है। मुझे तुम्हारी सहेली तृप्ति से पता चला कि तुम्हारी दिनचर्या अत्यधिक अस्त-व्यस्त है तथा तुमने योगासन करना भी छोड़ दिया है जिसके कारण तुम्हारे स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ रहा है और पढ़ाई में भी तुम्हारा मन भी एकाग्र नहीं हो पा रहा है इसके अतिरिक्त तुम्हारी अन्य गतिविधियाँ भी प्रभावित हैं। मेरी सलाह है कि तुम नियमित रूप से योगा अभ्यास अवश्य करो । इसके बहुत से सकारात्मक परिणाम तुम्हें स्वत: अनुभव होंगे।

प्रिय संजना योगासन से शरीर में रक्त का संचार बढ़ता है। माँसपेशियाँ सुदृढ़ होती हैं तथा आलस्य दूर हो जाता है। योगासन तथा योग करने वाले छात्रों का मन पढ़ाई में भी खूब लगता है तथा उनकी स्मरण शक्ति भी बढ़ती हैं। तुमने पढ़ा ही होगा-'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है'। अतः मेरी सलाह मानो और नियमित योग तथा व्यायाम करने का अभ्यास डालो साथ ही साथ अपनी खान-पान की आदत में भी सुधार लाने का प्रयास अवश्य करो।
मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम मेरी सलाह पर तुरन्त अमल शुरू कर दोगी तथा पत्र द्वारा मुझे सूचित भी करोगी। घर में सभी को मेरा प्रणाम कहना, शेष मिलने पर।
तुम्हारी बहन
रिया

**OR**

421, दशरथ,

नई दिल्ली-18

दिनांक : 17 जनवरी, 2019

प्रिय मित्र गोविंदन
सादर नमस्कार,

आशा है कि तुम सपरिवार कुशल से होगे। कल ही तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो गयी है और तुम्हारा विद्यालय 30 जनवरी तक बन्द हो गया है। मेरी तथा मेरे घर के सभी सदस्यों की बहुत दिनों से यह इच्छा थी कि तुम्हें कुछ दिनों के लिए यहाँ बुलाएँ, परंतु तुम्हारी पढ़ाई का विचार कर ऐसा नहीं कर पाए। अब तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो गई है और विद्यालय बंद हो गया है अतः अब तुम्हें यहाँ आने में कोई दिक्कत नहीं होगी । इस बार हमने रानीखेत और नैनीताल की यात्रा का कार्यक्रम बनाया है। वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य मन को लुभाने वाला है तथा झीलें भी बहुत बड़ी-बड़ी हैं। आपके चेन्नई में यह सब कहाँ देखने को मिलता है। इस मौसम में रानीखेत और नैनीताल की सुंदरता उस समय कई गुना बढ़ जाती है जब वहाँ बर्फ गिरती है। सैलानी खूब जी भर कर उस बर्फ में खेलते हैं और आनंद उठाते हैं। मैंने और भी कई पुराने मित्रों को निमंत्रित किया है वे सभी आने के लिए तैयार हैं बस तुम्हारी हाँ का इंतजार है।

प्रिय मित्र, मुझे पूरा विश्वास है कि तुम निश्चित रूप से मेरे निमंत्रण को स्वीकार करोगे | हम सभी तुम्हारी हाँ की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैंने कई योजनाएँ बनाई है | इस बार तुम जरूर आना क्योंकि शायद मैं आगे की पढ़ाई के लिए विदेश चला जाऊँगा। मेरी बहुत इच्छा है कि हम सभी पुराने मित्र एक बार अवश्य मिलें। आने से पूर्व यहाँ पहुँचने की तिथि से अवगत कराना जिससे मैं तुम्हें लेने स्टेशन आ सकूँ। अपने आने की सूचना यथाशीघ्र भेजना।

तुम्हारा मित्र
बलवंत

13.

**देवभूमि उत्तराखंड में आपका स्वागत है!**

UTTARKASHI
RUDRAPRAYAG
DEHRADUN
TEHRI GARHWAL
CHAMOLI
PITHORAGARH
BAGESHWAR
PAURI GARHWAL
HARIDWAR
ALMORA
NAINITAL
CHAMPAWAT
UDHAM SINGH NAGAR

**हरियाली यहाँ अपार है, बर्फ का अंबार है।**

**देवों की महिमा का आधार है, प्रकृति लुटाती जहाँ प्यार है।**

उत्तराखंड राज्य पर्यटन विभाग की ओर से आप सबका हार्दिक स्वागत है।

सेवा का मौका दें और उत्तराखंड की संस्कृति को जानें

टोल फ्री नं.-१८०० १८० ####

**OR**

**आवश्यकता है**

कपड़े की दुकान पर काम करने वाले कुछ लडकों की|
उम्र 18 से 21 वर्ष तक वेतन योग्यतानुसार। रहने खाने की व्यवस्था दुकान की तरफ से होगी। मेहनती एवं स्वस्थ लड़के ही आवेदन करें ।
पूर्व अनुभवी को प्राथमिकता
पहचान-पत्र के साथ मिलें प्रातःकाल :- 9-10 के बीच।
राजेश चौधरी : -900125XXXX
दुकान संख्या २५,घंटा घर, पाटन (राजस्थान)